Rizwan

Package of Practice

Particular	English	Hindi
Crop	**Spongegourd**	**Spongegourd**
Season/Region	Summer, Rabi, Kharif as per Truthful Label	ग्रीष्म, रबी, खरीफ (ट्रूथफुल लेबल के अनुसार)
Land preparation	Field should be well prepared free from weeds and well drainage facility. 1-2 deep ploughing, Soil should be exposed to sunlight, 3 to 4 rounds of harrows to reach fine tilt. Before final harrow, apply 8 - 10 MT well decomposed FYM/acre along with 250 gm Trichoderma for controlling soil born fungus.	खेत को खरपतवारों से मुक्त और अच्छी जल निकासी की सुविधा के साथ अच्छी तरह तैयार किया जाना चाहिए। 1-2 गहरी जुताई करें, मिट्टी को धूप में खुला रखें, 3 से 4 बार हैरो चलाएँ ताकि मिट्टी अच्छी तरह से झुक जाए। अंतिम हैरो चलाने से पहले, मिट्टी जनित फफूंद को नियंत्रित करने के लिए 8-10 मीट्रिक टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद/एकड़ के साथ 250 ग्राम ट्राइकोडर्मा डालें।
Seed rate & Method	Seed Rate: 500-700 g per acre. Sowing: Direct in main field.	बीज दर: 500-700 ग्राम प्रति एकड़। बुवाई: मुख्य खेत में सीधे।
Spacing	Spacing: Row to Row and Plant to Plant - a) 180 x 60 cm, b)120x60 cm depending upon crop	दूरी: पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे - a) 180 x 60 सेमी, b) फसल के आधार पर 120 x 60 सेमी
Harvest	Harvest the fruit at the time of physiological maturity. It starts maturing by 55 – 60 days after sowing – depending on season / climate. Picking is done generally at an interval of 6-7 days.	फलों की कटाई शारीरिक परिपक्वता के समय करें। यह बुवाई के 55-60 दिनों के बाद पकना शुरू हो जाता है - मौसम/जलवायु पर निर्भर करता है। आमतौर पर फलों की तुड़ाई 6-7 दिनों के अंतराल पर की जाती है।
Expected Average Yield	Average yield: 8 – 15 MT /acre (depending on crop, season and cultural practice)	औसत उपज: 8 – 15 मीट्रिक टन/एकड़ (फसल, मौसम और कृषि पद्धति पर निर्भर)
Nutrient Management	Total N:P:K requirement @ 80:80:100 kg per acre. Dose & Timing: Basal Dose: Apply 50% N and 100% P, K as basal dose during final land preparation. Top Dressing: 25% N at 30 days after sowing and 25% N at 50 days after sowing.	कुल नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटेशियम की आवश्यकता 80:80:100 किग्रा प्रति एकड़। मात्रा एवं समय: आधारभूत मात्रा: अंतिम भूमि तैयारी के दौरान 50% नाइट्रोजन और 100% फास्फोरस, पोटेशियम की आधारभूत मात्रा डालें। टाप ड्रेसिंग: बुवाई के 30 दिन बाद 25% नाइट्रोजन और बुवाई के 50 दिन बाद 25% नाइट्रोजन डालें।
Pest & Disease management	For effective Diseases & Pest control apply fungicide as per recommendation from the Department of Agriculture (plant protection) to control Damping off, Downey Mildew, Powdery Mildew and other fungal diseases. Apply recommended insecticide to control sucking pest, fruit fly and any other insects.	प्रभावी रोग एवं कीट नियंत्रण के लिए, कृषि विभाग (पौध संरक्षण) की अनुशंसा के अनुसार डैम्पिंग ऑफ, डाउनी मिल्ड्यू, पाउडरी मिल्ड्यू और अन्य कवकीय रोगों को नियंत्रित करने के लिए कवकनाशी का प्रयोग करें। चूषक कीट, फल मक्खी और अन्य कीटों को नियंत्रित करने के लिए अनुशंसित कीटनाशक का प्रयोग करें।
Weed Control - Chemicals with doses and timing	Timely weed removal is very important, need based hand weeding can be done to ensure healthy crop.	समय पर खरपतवार निकालना बहुत महत्वपूर्ण है, स्वस्थ फसल सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार हाथ से निराई की जा सकती है।
Irrigation Schedule	Irrigation Frequency Depends upon - A. Soil type: Light soils need more frequency. Heavy soils needs less frequency. B. Crop stage: Vegetative stage: maintain adequate moisture for development of roots. Flowering & fruiting - frequent and shallow irrigation. Harvesting - gradually reduce irrigation during harvesting. C. Growing season: Summer — requires frequent irrigation. Winter — As against Summer season, in winter the irrigation frequency is longer. Rainy — very less frequency depending up on soil moisture.	सिंचाई की आवृत्ति इस पर निर्भर करती है - क. मिट्टी का प्रकार: हल्की मिट्टी में अधिक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। भारी मिट्टी में कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। ख. फसल अवस्था: वानस्पतिक अवस्था: जड़ों के विकास के लिए पर्याप्त नमी बनाए रखें। पुष्पन और फलन - बार-बार और उथली सिंचाई करें। कटाई - कटाई के दौरान सिंचाई धीरे-धीरे कम करें। ग. उगने का मौसम: ग्रीष्मकाल - बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। शीतकाल - ग्रीष्मकाल की तुलना में, शीतकाल में सिंचाई की आवृत्ति अधिक होती है। वर्षाकाल - मिट्टी की नमी के आधार पर बहुत कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।